بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्ब: जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 13.11.2026 स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.
(नबुव्वत महीने की तिथि- 13,1405 हश)

सादगी और बे-तकल्लुफ़ी के हवाले से आंहज़रत ﷺ के गुलाम-ए-सादिक़ हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सीरत-ए-तैयबा का बयान।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 13.11.2026

محلہ احمدیہ قادیان،پنجاب،143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूर: फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: पिछले ख़ुतबात में मैंने आंहज़रत ﷺ के सादगी के हवाले से उसव-ए-हसन: का ज़िक्र किया था। आज अपने आक़ा की पैरवी में आप ﷺ के गुलाम-ए-सादिक हज़रत मसीह मौऊद अलै. की कुछ बातें, कुछ वाक़आत इस हवाले से पेश करूँगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि इस आजिज़ पर ज़ाहिर किया गया है कि यह ख़ाकसार अपनी गुरबत और इनकिसार (विनम्रता) और तवक्कुल और ईसार और आयात (निशानियों) और अनवार की रूह से मसीह की पहली ज़िंदगी का नमूना है और इस आजिज़ की फ़ितरत (इस विनीत का स्वभाव) और मसीह की फ़ितरत बाहम (आपस में) निहायत ही मुशाबह (मिलती-जुलती) वाक़े हुई है, गोया एक ही जोहर के दो टुकड़े या एक ही दरख़्त के दो फल हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि एक बार हुज़ूर अलैहिस्सलाम सैर को तशरीफ़ ले जा रहे थे, रास्ते में वफ़ात-ए-मसीह (अलैहिस्सलाम) पर बातचीत शुरू हो गई, किसी ने कहा कि हुज़ूर! अब तो मसीह की क़ौम भी मसीह की वफ़ात मान गई है, हुज़ूर! अब इस क़िस्से को जाने दें। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अभी भी इसमें से ज़हर निकलता रहता है, गोया अभी भी यह बहस ख़त्म नहीं हुई। जब

तक इसकी सिरी न खाई जाए, यानी जब तक इस मसले का सिर न कुचला जाए इसकी जान नहीं निकलती।

सैर के वक़्त हुज़ूर अलैहिस्सलाम बहुत तेज़ी के साथ चलते थे, यहाँ तक कि लोग भाग-भाग कर साथ मिला करते थे। कई बार लोगों के भागने से, लोगों के पाँव से हुज़ूर अलैहिस्सलाम की छड़ी गिर जाया करती, लेकिन आप अलै. ने कभी किसी को कुछ नहीं कहा।

इसी तरह सैर के दौरान अगर कभी हज़रत उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अनहा और दीगर ख़ातून साथ होतीं तो हुज़ूर अलै. बड़ी सादगी के साथ ख़ातून को नसीहतें फ़रमाते, कभी किसी उम्दा तिलावत करने वाले क़ारी से बड़े बेतकल्लुफ़ माहौल में तिलावत-ए-क़ुरआन मजीद सुना करते। सैर में यह बात भी न होती कि कोई आगे न बढ़े, बाज़ जलीलुल क़दर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ख़्याल करते कि यूँ लोगों के आगे बढ़ने से मिट्टी उड़ती है मगर हुज़ूर अलै. ने कभी इसकी परवाह नहीं की। सैर में अगर किसी के पाँव पड़ने की वजह से हुज़ूर अलै. की छड़ी गिर जाती या जूती पाँव से निकल जाती तो आप अलै. रुक जाते मगर पीछे मुड़कर न देखते कि उसे नदामत (शर्मिंदगी) न हो।

हज़रत भाई अब्दुर्रहमान साहब क़ादियानी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी का विशेष पहलू यह था कि आप अलै. को तकल्लुफ़ और बनावट से अपने आपको मुमताज़ ज़ाहिर करने की आदत नहीं थी।

एक दफ़ा आप अलैहिस्सलाम चोला बाबा नानक जी की ज़ियारत के लिए चन्द खुद्दाम के साथ डेरा बाबा नानक तशरीफ़ ले गए। वहाँ एक बड़ (बरगद) के दरख़्त के नीचे कपड़ा बिछाकर हुज़ूर अलैहिस्सलाम अहबाब-ए-जमाअत के साथ बैठ गए। कसबे के लोग आए तो बहुत से लोगों को धोका लगा कि मौलवी मुहम्मद अहसन साहब गोया मसीह मौऊद हैं। लोग उनसे मुसाफ़्हा करने लगे। फिर मौलवी साहब रज़ियल्लाहु अन्हु के बताने से लोग आप अलैहिस्सलाम की तरफ़ मुतवज्जह हुए। इस किस्म के वाक़आत आपकी ज़िंदगी में बेशुमार हैं।

हुज़ूर फ़रमाते हैं कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम की नशिस्त (सभा) इंतिहाई बेतकल्लुफ़ाना होती थी। हज़रत मुंशी इमाम दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने 1894 ईस्वी में हुज़ूर अलैहिस्सलाम के दस्त-ए-मुबारक पर बैअत की थी। वह बयान करते हैं कि बैअत के लिए हुज़ूर अलैहिस्सलाम मुझे बैतुल फ़िक्र के अंदर ले गए और वहाँ मौजूद चारपाई की पायंती की तरफ़ ख़ुद तशरीफ़ फ़रमा हुए और मुझे सिरहाने की तरफ़ बिठाया।

हज़रत चौधरी बुड्ढा साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक दफ़ा मैं क़ादियान आया तो नए मेहमान ख़ाने में चारपाइयाँ नई-नई थीं और एक पुरानी थी। हज़रत साहब तशरीफ़ लाए और पुरानी

टूटी हुई चारपाई पर बैठ गए, छह-सात आदमी और थे। सब को फ़रमाया बैठ जाओ। वह कहते हैं कि हमें बड़ी शर्म आई कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम छोटी सी टूटी हुई चारपाई पर बैठ गए हैं।

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हु अपने बैअत के वाक़ए का ज़िक्र करते हुए कहते हैं कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम मुझे एक अलग मकान में ले गए और अंदर से दरवाज़ा बंद कर दिया। एक चारपाई बिछी थी उस पर हम दोनों बैठ गए। मेरा दाहिना हाथ हज़रत साहब अलैहिस्सलाम ने अपने हाथ में लिया और दस शर्तो की पाबंदी की मुझ से बैअत ली।

हुज़ूर अनवर ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बिस्तर और बोरीए की सादगी के हवाले से कई रिवायतें पेश फ़रमाई। आथम से बहस के दौरान बीमारी में भी हुज़ूर अलैहिस्सलाम ऐसे बिस्तर पर आराम फ़रमाते जिस पर न तकिया था न बिस्तर, कमर तक बोरीए पर होते और बाक़ी जिस्म मुबारक ज़मीन पर होता।

एक बार कुछ नौजवानों ने हुज़ूर अलैहिस्सलाम की गाड़ी घोड़ों की जगह ख़ुद खींचने का इरादा किया। हुज़ूर अलैहिस्सलाम को इसका इल्म हुआ तो फ़रमाया कि घोड़े वापस जोतो! हम इंसान को हैवान बनाने के लिए दुनिया में नहीं आए। हम तो हैवानों को इंसान बनाने के लिए दुनिया में आए हैं।

यह ज़िक्र आइंदा जारी रहने का इरशाद फ़रमाने के बाद ख़ुतबे के दूसरे हिस्से में हुज़ूर अनवर ने दर्ज-ए-ज़ैल मरहूमीन का ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब अदा करने का इरशाद फ़रमाया।

अलहाज शैख़ यूसुफ उस्मान कंबोलाया साहिब, मुबल्लिग़ सिलसिला तंज़ानिया, मरहूम तंज़ानी थे और 6 नवंबर को 84 साल की उम्र में वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजिऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। बहैसियत मुबल्लिग़ तंज़ानिया के मुख्तलिफ़ रीजंस में खिदमत की तौफ़ीक़ पाई है।

मुकर्रमा उमतुशशाफी साहिबा अह्लिया कैप्टन महमूद अहमद खान साहिब। मरहूमा हज़रत मिर्ज़ा शरीफ अहमद साहिब रज़ि. की पोती ,हज़रत नवाब उमतुल-हफ़ीज़ बेगम साहिबा रज़ि. की नवासी ,साहबज़ादा कर्नल मिर्ज़ा दाऊद अहमद साहिब की बेटी थीं। मरहूमा गत दिनों 82 साल की उम्र में वफात पा गईं। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजिऊन। मरहूमा मूसिया थीं। कराची में लजना इमाउल्लाह में लोकल सदर और मेंबर आमिला के तौर पर भी खिदमत की तौफ़ीक़ पाई। हज़रत खलीफतुल-मसीह सालीस रह. ने उनका निकाह पढ़ाया तो ख़ुतबे में फरमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी औलाद के लिए बड़ी दुआएं की हैं ...पस हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तरफ मंसूब हो जाना या यह समझ लेना कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमारे लिए

दुआएं फरमाई हैं ,काफ़ी नहीं है। अगर हम अपनी ज़िम्मेदारियों की तरफ मुतवज्जह न हों, जो इन दुआओं के नतीजे में हम पर आती हैं ,तो ये दुआएं हमारे लिए मुफ़ीद नहीं हैं। ये दुआएं उस वक्त हमारे लिए मुफ़ीद हो सकती हैं जब हम वह ज़िम्मेदारियां भी अदा करें जो इन दुआओं के नतीजे में हम पर पड़ती हैं।

फिर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

शैतान से दूर रखियो, अपने हुज़ूर रखियो

इसमें भी हमें मुतवज्जह किया कि शैतान का गलबा उन लोगों पर नहीं होता जो ख़ुदा की राह में मुजाहिदा करते हैं और मुजाहिदे का हक़ अदा करते हैं। अगर तुम ऐसा करोगे तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की यह दुआ तुम्हारे हक़ में क़बूल होगी।

यह नसीहतें पेश करने के बाद हज़रत अमीरुल-मोमिनीन ने फ़रमाया कि यह बहुत अहम नसीहतें हैं, इनके बच्चों के लिए भी, खानदान के दीगर अफ़राद के लिए भी और अफ़राद-ए-जमाअत के लिए भी। इन पर गौर करना चाहिए, इन पर अमल करना चाहिए। अगर यह होगा तो तभी हम हक़ीक़त में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा करने वाले होंगे।

मुकर्रम अब्दुर्रफ़ीक़ जदरान साहिब ऑफ़ अमेरिका। मरहूम गुज़िश्ता दिनों (76) साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मरहूम मूसी थे। मरहूम ने घाना में नुसरत जहां स्कीम के तहत ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई।

सलीमा तबस्सुम साहिबा अहलिया मुकर्रम मिर्ज़ा अब्दुल हमीद साहिब मरहूम ऑफ़ मीरपुर ख़ास सिंध। मरहूमा सिएरा लियोन में (73) साल की उम्र में वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

हुज़ूर अनवर ने तमाम मरहूमीन की मग़फ़िरत और बुलंदी-ए-दरजात के लिए दुआ की और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने का ऐलान फ़रमाया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ
اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात,पंजाब - 18001032131